

रविवार 22 फ़रवरी, 2026

विषय — मन

स्वर्ण पाठ: यशायाह 26: 3

"जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: रोमियो 12: 1-3

1 कुरिन्थियों 2: 14-16

- 1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
- 2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥
- 3 क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूं, कि जैसा समझना चाहिए, उस से बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बांट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।
- 14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती है।
- 15 आत्मिक जन सब कुछ जांचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता।
- 16 क्योंकि प्रभु का मन किस ने जाना है, कि उसे सिखलाए? परन्तु हम में मसीह का मन है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. फिलिप्पियों 2: 1-13

- 1 सोयदि मसीह में कुछ शान्ति और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है।
- 2 तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चिन्त, और एक ही मनसा रखो।
- 3 विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।
- 4 हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करे।
- 5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।

- 6 जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।
- 7 वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।
- 8 और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।
- 9 इस कारण परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया, और उस को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।
- 10 कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।
- 11 और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है॥
- 12 इस कारण, मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।
- 13 क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस न अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

2. मत्ती 4: 23, 24

- 23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।
- 24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुएों को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।

3. मरकुस 5: 1-16

- 1 और वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुंचे।
- 2 और जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिस में अशुद्ध आत्मा थी कब्रों से निकल कर उसे मिला।
- 3 वह कब्रों में रहा करता था। और कोई उसे सांकलों से भी न बान्ध सकता था।
- 4 क्योंकि वह बार बार बेडियों और सांकलों से बान्धा गया था, पर उस ने सांकलों को तोड़ दिया, और बेडियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था।
- 5 वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था।
- 6 वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, और उसे प्रणाम किया।
- 7 और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा; हे यीशु, पर मप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि मुझे पीड़ा न दे।
- 8 क्योंकि उस ने उस से कहा था, हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ।
- 9 उस ने उस से पूछा; तेरा क्या नाम है? उस ने उस से कहा; मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं।
- 10 और उस ने उस से बहुत बिनती की, हमें इस देश से बाहर न भेज।

- 11 वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था।
- 12 और उन्होंने उस से बिनती करके कहा, कि हमें उन सूअरों में भेज दे, कि हम उन के भीतर जाएं।
- 13 सो उस ने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गई और झुण्ड, जो कोई दो हजार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर झील में जा पड़ा, और डूब मरा।
- 14 और उन के चरवाहों ने भागकर नगर और गांवों में समाचार सुनाया।
- 15 और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए। और यीशु के पास आकर, वे उस को जिस में दुष्टात्माएं थीं, अर्थात् जिस में सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखकर, डर गए।
- 16 और देखने वालों ने उसका जिस में दुष्टात्माएं थीं, और सूअरों का पूरा हाल, उन को कह सुनाया।

4. भजन संहिता 46: 1-3 (से 1st.), 4-7 (से 1st.), 8-11 (से 1st.)

- 1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
- 2 इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं।
- 3 चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठें॥
- 4 एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात् परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनन्द होता है।
- 5 परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है।
- 6 जाति जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे; वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई।
- 7 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है॥
- 8 आओ, यहोवा के महाकर्म देखो, कि उसने पृथ्वी पर कैसा कैसा उजाड़ किया है।
- 9 वह पृथ्वी की छोर तक लड़ाइयों को मिटाता है; वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है, और रथों को आग में झोंक देता है!
- 10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूं। मैं जातियों में महान हूं, मैं पृथ्वी भर में महान हूं!
- 11 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है॥

5. कुलुस्सियों 3: 15 (होने देना)

- 15 ... और मसीह की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो।

6. रोमियों 15: 5, 6, 13

- 5 और धीरज, और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे, कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो।
- 6 ताकि तुम एक मन और एक मुंह होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की बड़ाई करो।
- 13 सो परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 507: 24 (से,)

अनंत मन सब कुछ बनाता और चलाता है,

2. 469: 12-31 अगला पृष्ठ

सवाल: — मन क्या है?

जवाब:— मन ही ईश्वर है। त्रुटि का नाश करने वाला महान सत्य है कि भगवान, अच्छा, एकमात्र दिमाग है, और यह कि अनंत मन के विपरीत - जिसे शैतान या बुराई कहा जाता है - मन नहीं है, सत्य नहीं है, बल्कि त्रुटि, बुद्धि या वास्तविकता के बिना है। एक ही मन हो सकता है, क्योंकि एक ही परमात्मा है; और यदि नश्वर ने किसी अन्य मन का दावा नहीं किया और किसी अन्य को स्वीकार नहीं किया, तो पाप अज्ञात होगा। हमारे पास एक मन हो सकता है, अगर वह अनंत है। हम अनन्तता की भावना को दफनाते हैं, जब हम मानते हैं कि, हालांकि ईश्वर अनंत है, इस अनंत में बुराई का स्थान है, क्योंकि बुराई के लिए कोई जगह नहीं हो सकती है, जहां सभी स्थान ईश्वर से भरे हुए हैं।

हम सर्वशक्तिमानता के उच्च संकेत को खो देते हैं, जब यह स्वीकार करने के बाद कि ईश्वर, या अच्छा, सर्वव्यापी है और सर्व-शक्ति है, हम अभी भी मानते हैं कि एक और शक्ति है, जिसका नाम बुराई है। यह धारणा कि ईश्वरीय धर्मशास्त्र के लिए एक से अधिक मन उतना ही खतरनाक है जितना कि प्राचीन पौराणिक कथाएं और मूर्तिपूजक मूर्तिपूजा। एक पिता, यहां तक कि भगवान के साथ, मनुष्य का पूरा परिवार भाइयों होगा; और एक मन और उस ईश्वर, या भलाई के साथ, मनुष्य का भाईचारा प्रेम और सत्य से मिलकर बना होगा, और इसमें सिद्धांत और आध्यात्मिक शक्ति की एकता होगी जो दिव्य विज्ञान का गठन करती है। एक से अधिक मन का माना गया अस्तित्व मूर्तिपूजा की मूल त्रुटि थी। इस त्रुटि ने आध्यात्मिक शक्ति की हानि, जीवन की आध्यात्मिक उपस्थिति की हानि को बिना किसी असमानता के अनंत सत्य के रूप में और प्रेम के नुकसान को हमेशा-वर्तमान और सार्वभौमिक मान लिया।

ईश्वरीय विज्ञान अमूर्त कथन की व्याख्या करता है कि निम्नलिखित स्व-स्पष्ट प्रस्ताव द्वारा एक मन है: यदि ईश्वर, या अच्छा, वास्तविक है, तो बुराई, ईश्वर की अवांछितता, असत्य है। और बुराई केवल असत्य को वास्तविकता देकर वास्तविक प्रतीत हो सकती है। भगवान के बच्चों के पास एक मन है। अच्छाई बुराई में कैसे ढल सकती है, जब मनुष्य का मन ईश्वर, कभी पाप नहीं करता है? पूर्णता का मानक मूल रूप से भगवान और मनुष्य थे। क्या ईश्वर ने अपने स्वयं के मानक को नीचे रखा है, और क्या मनुष्य पाप में गिर गया है?

ईश्वर मनुष्य का निर्माता है, और, मनुष्य का ईश्वरीय सिद्धांत शेष पूर्ण है, दिव्य विचार या प्रतिबिंब, मनुष्य, परिपूर्ण रहता है मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व की अभिव्यक्ति है। अगर कभी ऐसा क्षण आया जब मनुष्य ने ईश्वरीय पूर्णता को व्यक्त नहीं किया, तब एक ऐसा क्षण आया जब मनुष्य ने ईश्वर को व्यक्त नहीं किया, और फलस्वरूप एक समय

था जब देवता अप्रसन्न थे — यह इकाई के बिना है। अगर मनुष्य ने पूर्णता खो दी है, तो उसने अपने सिद्ध सिद्धांत, दिव्य मन को खो दिया है। यदि मनुष्य कभी भी इस सिद्ध सिद्धांत या मन के बिना अस्तित्व में था, तो मनुष्य का अस्तित्व एक मिथक था।

3. 480: 10-12

चेतना, साथ ही साथ क्रिया, मन द्वारा शासित होती है, - ईश्वर में है, जो कि सभी विज्ञानों के मूल और राज्यपाल से पता चलता है।

4. 411: 13-26

यह दर्ज है कि एक बार यीशु ने एक बीमारी का नाम पूछा, - एक बीमारी जिसे आधुनिक लोग मनोभ्रंश कहते हैं। दानव, या दुष्ट, ने जवाब दिया कि उसका नाम लीजन था। उसके बाद यीशु ने बुराई को खत्म कर दिया, और पागल आदमी को बदल दिया गया और सीधे पूरे हो गए। इंजील आयात करने के लिए लगता है कि यीशु ने बुराई को आत्म-देखा और इसलिए नष्ट कर दिया।

सभी बीमारी का कारण और आधार भय, अज्ञानता या पाप है। रोग हमेशा एक झूठी भावना से प्रेरित होता है जो मानसिक रूप से मनोरंजन करता है, नष्ट नहीं होता है। रोग एक विचार की बाहरी छवि है। मानसिक अवस्था को भौतिक अवस्था कहते हैं। नश्वर मन में जो कुछ भी पोषित किया जाता है क्योंकि शरीर पर शारीरिक स्थिति की नकल की जाती है।

5. 520: 3 (अपरिमेय)-10, 28-3

अथाह मन प्रकट होता है। अनंत प्रेम की गहराई, चौड़ाई, ऊंचाई, पराक्रम, ऐश्वर्य और महिमा सारे स्थान को भर देती है। वह पर्याप्त है! मानव भाषा जो मौजूद है उसका केवल एक छोटा सा हिस्सा दोहरा सकती है। परम आदर्श, मनुष्य, उसके अनंत सिद्धांत, प्रेम की तुलना में न तो अधिक देखा जाता है और न ही समझा जाता है। सिद्धांत और उसका विचार, मनुष्य, सहअस्तित्व और शाश्वत हैं।

क्योंकि मन ही सब कुछ बनाता है, अतः निम्न शक्ति द्वारा बनाने के लिए कुछ भी शेष नहीं रहता। आत्मा मन के विज्ञान के माध्यम से कार्य करती है, मनुष्य को कभी भी जमीन जोतने के लिए प्रेरित नहीं करती, बल्कि उसे मिट्टी से श्रेष्ठ बनाती है। इसका ज्ञान मनुष्य को मिट्टी, पृथ्वी और उसके वातावरण से ऊपर उठाकर सचेतन आध्यात्मिक सद्भाव और शाश्वत अस्तित्व की ओर ले जाता है।

6. 169: 18-28

विज्ञान न केवल सभी बीमारियों की उत्पत्ति को मानसिक रूप से प्रकट करता है, बल्कि यह भी घोषणा करता है कि सभी रोग दिव्य मन से ठीक हो जाते हैं। इस माइंड को छोड़कर कोई भी उपचार नहीं हो सकता है, हालांकि हम एक दवा या किसी अन्य साधन पर भरोसा करते हैं जिसके लिए मानव विश्वास या प्रयास का निर्देशन किया जाता है। यह नश्वर मन है, कोई फर्क नहीं पड़ता, जो बीमार को लाता है जो कुछ भी अच्छा लगता है वह भौतिकता से प्राप्त कर सकता है। लेकिन दैवीय शक्ति के माध्यम से बीमारों को वास्तव में ठीक नहीं किया जाता है। केवल सत्य, जीवन और प्रेम की क्रिया सद्भाव दे सकती है।

7. 201: 7 (सच)-9

सत्य एक नया प्राणी बनाता है, जिसमें पुरानी चीजें गुजर जाती हैं और "सभी चीजें नई हो गई हैं।"

8. 371: 27-32

दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके "हर तिनका को पूरा" कर सकते हैं।

9. 417: 10-16

क्रिश्चियन साइंस के तथ्यों को बनाए रखें, - कि आत्मा ईश्वर है, और इसलिए बीमार नहीं हो सकता; जो बात है उसे बीमारी नहीं कहा जा सकता है; आध्यात्मिक कार्य के माध्यम से कार्य करने का सारा कारण माइंड है। फिर सत्य और प्रेम की अनकही समझ के साथ अपनी जमीन पकड़ें, और आप जीतेंगे।

10. 391: 7-13

रोग के उद्दीप्त या उन्नत चरणों में अंधे और शांत प्रस्तुत करने के बजाय, उनके खिलाफ विद्रोह में वृद्धि। इस विश्वास को समाप्त करें कि आप संभवतः एक ही असहनीय दर्द का सामना कर सकते हैं, जिसे मन की शक्तियों द्वारा खारिज नहीं किया जा सकता है, और इस तरह आप शरीर में दर्द के विकास को रोक सकते हैं। भगवान का कोई भी कानून इस परिणाम में बाधा नहीं डालता है।

11. 453: 29-30

एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट की दवा मन है, ईश्वरीय सत्य है जो मनुष्य को स्वतंत्र बनाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6